शिव तांडव स्तोत्रं

शिव तांडव स्तोत्रं

जटाटवी गलज्जल प्रवाह पावितस्थले
गलेवलंब्य लंबितां भुजंगतुंगमालिकां |
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकार चंडतांडवं तनोतु नः शिवः शिवं || 1 ||

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरी
विलोलवीचिवल्लरी विराजमानमूर्धनि |
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाट पट्टपावके
किशोरचंद्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम || 2 ||

धराधरेंद्र नंदिनी विलासबंधु बंधुर
स्फुरद्दिगंत संतति प्रमोद मानमानसे |
कृपाकटाक्षधोरणी निरुद्ध दुर्धरापदि
क्वचिद्दिगंबरे मनोविनोदमेतु वस्तुनि || 3 ||

जटाभुजंग पिंगळ स्फुरत्फणा मणिप्रभा
कदंब कुंकुम द्रव प्रलिप्त दिग्वधूमुखे |
मदांध सिंधुर स्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि || 4 ||

सहस्रलोचन प्रभृत्यशेषलेख शेखर
प्रसूनधूळि धोरणी विधूसरांघ्रि पीठभूः |
भुजंगराजमालया निबद्ध जाटजूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोरबंधु शेखरः || 5 ||

ललाट चत्वरज्वलद्धनंजय स्फुलिंगभा
निपीत पंचसायकं नमन्निलिंपनायकं |
सुधामयूखलेखया विराजमान शेखरं
महाकपालि संपदे शिरोजटालमस्तु नः || 6 ||

कराळ फालपट्टिका धगद्धगद्धगज्ज्वल-
-द्धनंजयाहुतीकृत प्रचंड पंचसायके |
धराधरेंद्र नंदिनी कुचाग्र चित्रपत्रक-
-प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम || 7 ||

नवीनमेघमंडली निरुद्ध दुर्धर स्फुरत्
कुहू निशीथिनी तमः प्रबंध बद्ध कंधरः |
निलिंप निर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिंधुरः
कळानिधान बंधुरः श्रियं जगद्धुरंधरः || 8 ||

प्रफुल्ल नील पंकज प्रपंच कालिमप्रभा-
-वलंबि कंठ कंदली रुचि प्रबद्ध कंधरं |
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदांधकच्छिदं तमंतकच्छिदं भजे || 9 ||

अखर्व सर्वमंगळा कळाकदंबमंजरी
रसप्रवाह माधुरी विजृंभणा मधुव्रतं |
स्मरांतकं पुरांतकं भवांतकं मखांतकं
गजांतकांधकांतकं तमंतकांतकं भजे || 10 ||

जयत्वदभ्र विभ्रम भ्रमद्भुजंगमश्वस-
-द्विनिर्गमत् क्रमस्फुरत् कराळ फालहव्यवाट् |
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन् मृदंग तुंग मंगळ-
-ध्वनिक्रम प्रवर्तित प्रचंड तांडवः शिवः || 11 ||

दृषद्विचित्र तल्पयोर्भुजंग मौक्तिक स्रजो-
-र्गरिष्ठ रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्ष पक्षयोः |
तृणारविंद चक्षुषोः प्रजामही महेंद्रयोः
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहं || 12 ||

कदा निलिंपनिर्झरी निकुंजकोटरे वसन्
विमुक्त दुर्मतिः सदा शिरस्थमंजलिं वहन् |
विलोल लोललोचनो ललामफाललग्नकः
शिवेति मंत्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहं || 13 ||

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति संततं |
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिंतनं || 14 ||

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शंभुपूजनपरं पठति प्रदोषे |
तस्य स्थिरां रथगजेंद्र तुरंगयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शंभुः || 15 ||

इति श्रीदशकंठरावण विरचितं श्री शिव तांडव स्तोत्रं |